Self Respect

02-09-2014

- ✓रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं । रूहानी बच्चे जानते हैं हम अपने लिए अपना दैवी राज्य फिर से स्थापन कर रहे हैं क्योंकि तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो, तुम ही जानते हो ।
- ✓ अभी तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय के बने हो । पहले आसुरी सम्प्रदाय के थे । तुमको ईश्वर खुद कहते हैं मामेकम् याद करो ।
- ✓जो ब्राह्मण बनेंगे वही देवता बनेंगे । ब्राह्मणों के बाद हैं देवतायें । बाप ने समझाया है ब्राह्मण हैं चोटी । जैसे बच्चे बाजोली खेलते हैं - पहले आता है माथा चोटी । ब्राह्मणों को हमेशा चोटी होती है । तुम हो ब्राह्मण । पहले शूद्र अर्थात् पैर थे । अभी बने हो ब्राह्मण चोटी फिर देवता बनेंगे ।

- ✓तुम बने हो ब्राह्मण चोटी । चोटी तो सबसे ऊँच है । देवताओं से भी ऊँच है । तुम इस समय देवताओं से भी ऊँच हो क्योंकि बाप के साथ हो । बाप इस समय तुमको पढ़ाते हैं । बाप ऑबीडीयंट सर्वेंट बना है ना । बाप बच्चों का ऑबीडीयंट सर्वेंट होता है ना ।
- ✓बेहद का बाप भी कहते हैं मैं जब आता हूँ तो कोई बच्चों के पास नहीं आता हूँ । तुम तो बड़े हो ना । तुमको बैठ शिक्षा देते हैं । तुम शिवबाबा के बच्चे बनते हो तो बी.के. कहलाते हो । उनसे पहले शूद्र कुमार-कुमारी थे, वेश्यालय में थे । अभी तुम वेश्यालय में रहने वाले नहीं हो ।

✓इन्द्रसभा तो यह है, जहाँ ज्ञान वर्षा होती है ।

✓यहाँ बी. के. रहते हैं, उन्हों को देवता अर्थात् पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बाप बना रहे हैं । बाप मीठे-मीठे बच्चों को समझाते हैं - कोई भी कायदा न तोड़े ।

✓इस दुनिया में अथाह दुख हैं । बाप आकर ज्ञान वर्षा करते हैं । तुम बच्चों द्वारा ही करते हैं । तुम्हारे लिए स्वर्ग रचते हैं । तुम ही योगबल से देवता बनते हो । बाप खुद नहीं बनते हैं । बाप तो हैं सर्वेंट।

- ✓यह बातें तुम बच्चे ही समझकर और धारण करते हो । दुनिया के मनुष्य तो कुछ नहीं जानते ।

- ✓देवता तो तुम ही बनते हो, जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है ।

- ✓यह है सत्य नारायण की कथा । वह तो झूठी कथा सुनाते हैं, उससे कोई लक्ष्मी वा नारायण बनते थोड़ेही हैं । यहाँ तुम प्रैक्टिकल में बनते हो, कलियुग में है ही सब झूठ । झूठी माया..... रावण का राज्य है ही झूठ ।

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

✓वरदान: बाप के स्नेह को दिल में धारण कर सर्व आकर्षणों से मुक्त रहने वाले सच्चे स्नेही भव !